कुरु सभा में कृष्ण

श्री कृष्ण हस्तिनापुर आए |

वे दूसरे पक्ष से संदेश लाए :

"अगर तुम न्याय करना चाहते हो, तो आधा राज्य दो |

नहीं तो, बस पाँच गाँव दे दो |

हम वही खुशी से स्वीकार कर लेंगे |

हम रिश्तेदारों पर तलवार नहीं उठायेंगे |"

पर दुर्योधन वह भी न दे सका |

वह समाज का आशीर्वाद ले न सका |

बल्कि, उसने श्री कृष्ण को बंदी बनाना चाहा।

उसने वह कोशिश की जो असम्भव था।

श्री कृष्ण ने हुंकार (गर्जन) किया।

वे अपना सम्पूर्ण स्वरूप फैलाकर खड़े हो गए।

धरती डोल उठी।

उन्होंने क्रोध के साथ कहा,

"जंजीर से पकड़ लो मुझे।

हाँ, दुर्योधन, बाँधो मुझे।

यह देखो, सारा आसमान मुझमें है।

सारी दुनिया मुझमें समाई हुयी है।

हिमालय मेरा चमकता हुआ मुकुट है।

धरती मेरा सीना है।

मेरी बाँहें पृथ्वी के चारों ओर उसे घेरे हुए हैं।

उत्तर और दक्षिण के पर्वत मेरे पैर हैं।

जलते हुए सारे सितारे मेरे मुँह के अंदर हैं।

आँखें हों तो इस विचित्र दृश्य को देखो ।

मुझमें सारे ब्रह्माण्ड को देखो।

“धरती, समुद्र और पाताल देखो।

बीते और आने वाले समय को देखो।

दुनिया की सृष्टि को देखो |

महाभारत के युद्ध को देखो |

जमीन शवों से भरी है |

ढूँढो इनमें तुम कहाँ हो |

“सारे आसमान में फैले मेरे केशों को देखो |

मेरे पैरों के नीचे पाताल को देखो |

मेरी मुट्ठी में भूत, वर्तमान और भविष्य को देखो |

मेरे इस भयानक स्वरूप को देखो |

सब जन्म मुझ ही से पाते हैं |

फिर लौट मुझ ही में आते हैं |

“मेरी जीभ से आग निकलती है |

मेरी साँस से हवा चलती है |

मैं जिधर देखता हूँ, उधर सबकुछ खिल उठता है |

जब मैं अपनी आँखें बंद करता हूँ, हर तरफ मौत छा जाती है |

“क्या तुम मुझे बांधना चाहते हो ?

कितनी लम्बी जंजीर लाए थे तुम ?

“ तुमने अच्छी सलाह नहीं ली |

तुमने दोस्ती की कीमत नहीं पहचानी |

तो, मैं अब वापस जाऊँगा ।

मैं तुम्हें अन्तिम निर्णय सुनाता हूँ।

अब बातचीत नहीं होगी।

युद्ध होगा।

अन्तिम जीत या मौत होगी।

तारे टकराएँगे ।

आग बरसेगी।

मौत अपना मुँह खोलेगी।

“दुर्योधन!

यह ऐसा युद्ध होगा, जैसा फिर कभी नहीं होगा |

भाई, भाई पर हमला करेंगे |

विषैले बाण बूँदों की तरह छूटेंगे |

गिद्ध और सियार जश्न मनायेंगे |

मानव के भाग्य फूटेंगे |

“आखिर, तुम जमीन पर गिरोगे |

पर तुम हिंसा के लिए उत्तरदायी होगे |”

[रामधारी सिंह 'दिनकर' की 'रश्मिरथी' से]